ISSN : 2583-2948

डॉ0 रश्मि शील

547क/245 शीतला पुरम

राजाजीपुरम-1,लखनऊ-226017

मो न- 923585868

ख़बर

सुबह छपी ये ख़बर

फिर किसी घर में लगी आग

मगर, नहीं जला कोई साजो -सामान

घर का चौखट,दरवाजा अथवा बंद खिड़की

बच रहा लपटों से पड़ोसी का मकान

घर के मुखिया के मुख पर है

इसलिए संतोष का भाव

जल गया एक पुराना स्टोव

लाल चूड़ियों की कलाई

और एक ख़्वाब, जो किसी की आँखों में

पानी बन रिसता था,

अनचाही बेबस आँखें

बस!

बस!

नहीं, शायद वे संवेदनाएं भी

जो मुझमें थी

और तुममें भी थी।

ISSN : 2583-2948

तेरी तकदीर

स्वप्न देखने को आतुर आँखों को

मल-मल कर धौंकता अँगीठी

आग सी सुलगती भूख को

अपने पेट से चिपका कर उकड़ू बैठा छोटू

चीथड़ों से झांकती छाती 'औ'

घुटने से लम्बे वस्त्रों ने बना दिया है,उसके क़द को बौना

क़द के चारों ओर बिखरा है

उसका संसार!

चाय के जूठे बर्तन,मालिक की गालियाँ,

ग्राहकों का शोर, फिरकी सी नाचती उसकी पतली टाँगें

ठंड से काँपता शरीर

सर पर चमकता

रोटी सरीखा चाँद।

हाथों की लकीरों से गहरा है

उसका खुरदरापन

वक़्त ने सौंपा है उसे

अपने होने का तिल- तिल मरता एहसास

कैसे कह दूँ, नन्हें-मुन्नें तेरी मुट्ठी में

तेरी तक़दीर है।

ISSN : 2583-2948

देवियाँ

नवरात्रि आने पर

देवी अधीष्ठित हो जाती हैं

मन में

मन्दिर में,

घर में

लाली की आँखों की चमक में

,भूख से चिपटे पेट की आँतों में,

अब नौ दिन उसे बुलाया जाएगा

प्रेम से जिमाया जाएगा

नहीं मारेगा उसे अभी कोई ताना

नहीं चुभेगा उसे लड़की होने का दंश

वह देखती है जीमने की थाली में सूरत

और चूमती है अपनी मुसकराहट

क्योंकि उसे पता है कि अगर लालियाँ नहीं होंगी

तो देवियाँ भी नहीं होंगी।

ISSN : 2583-2948

तुम्हारे लिए

गीत गुने

स्वप्न चुने

ख़ूब सजे

यादों के बाज़ार

गम की बहार

झूम उठी

मन की अमराइयों में

बौराई नागफनी

हूक की कूक

दिल में चुभी फाँस सी

और मैं डूबती-उतराती रही

सुख-दुख के सागर में प्रलय तक

तुम्हारे लिए !!